क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु

तेरापंथ - स्थापना

भाग-२

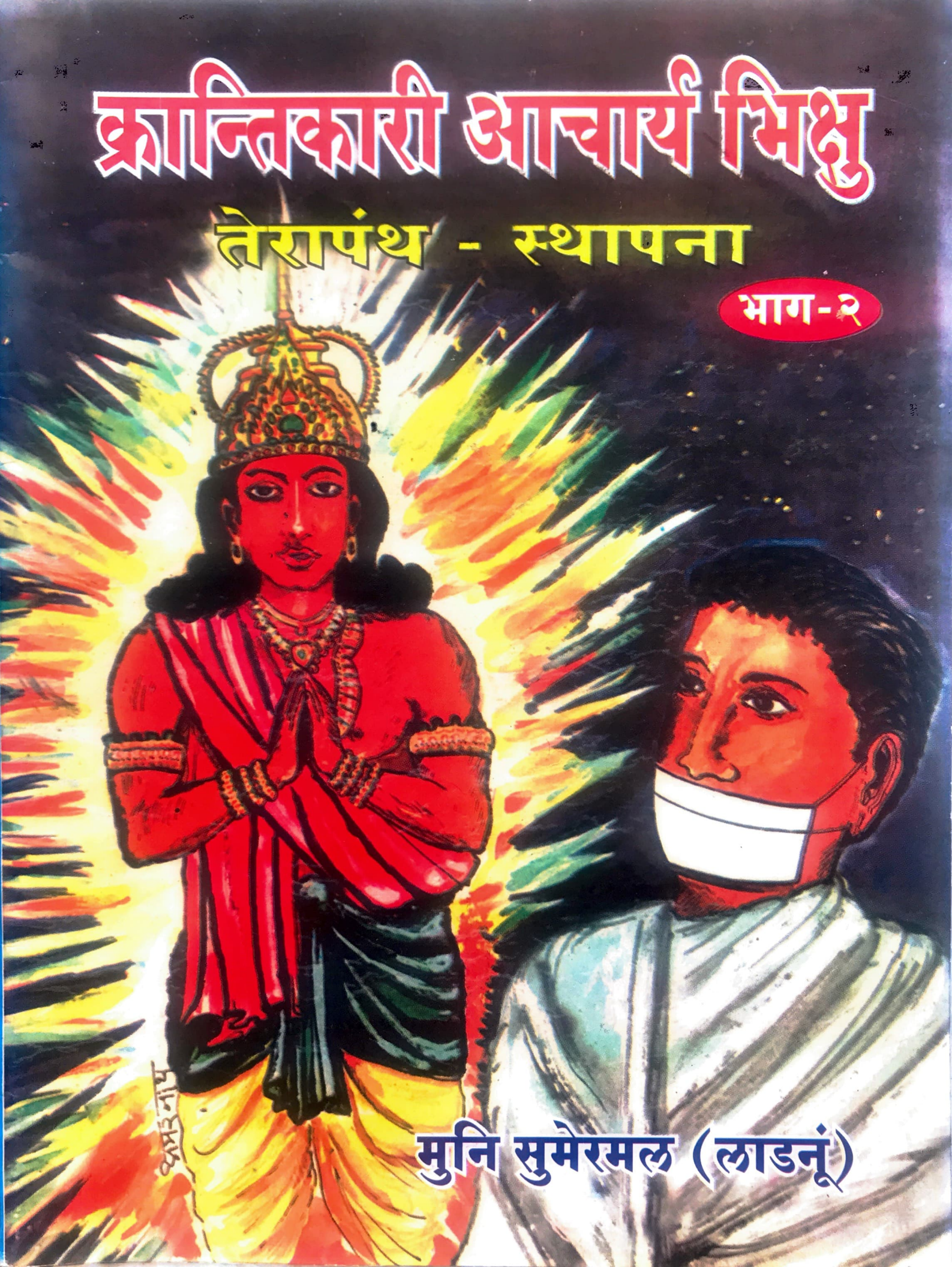

मुनि सुमेरमल (लाडनूं)

परिचय

मुनि भीखण के अभिनिष्क्रमण के साथ पूरे जैन समाज में हलचल मच गई । कई आत्मार्थी साधु अपने-अपने टोले से अलग हो कर मुनि भीखण के पास आने लगे । किन्तु मुनि भीखण किसी नये संप्रदाय का प्रारंभ करना नहीं चाहते थे । उनका लक्ष्य मात्र साधना करना था । वे पूज्य जयमल जी महाराज के पास गये, विस्तार से बातचीत की । वे मुनि भीखण की बातों से सहमत होते हुए भी अनेक कठिनाइयों के कारण साथ नहीं दे सके ।

बाल मुनि भारमल जी के पिता मुनि किसनो जी की प्रकृति कठोर थी, इसलिए मुनि भीखण ने उनको साथ रखने में असमर्थता प्रकट की । मुनि किसनो जी जाते हुए अपने पुत्र मुनि भारमल को ले गये । मुनि भारमल जी की साधना के प्रति समर्पण व कठोर अभिग्रह से विवश होकर किसनो जी ने उन्हें मुनि भीखण को पुनः सौंप दिया । मुनि भीखण तेरह साधु हो गए ।

जोधपुर में एक दिन तेरह श्रावक बाजार में सामायिक कर रहे थे, दीवान फतेहमल जी सिंघवी की उनसे लंबी बातचीत हुई । दीवान जी के एक प्रश्न के उत्तर में श्रावकों ने बताया कि भीखण जी स्वामी अभी तेरह साधु हैं और हम सभी सामायिक करने वाले भी तेरह श्रावक हैं । पास में खड़े एक सेवक की तुकबंदी से टोले का नाम 'तेरापंथ' हो गया । मुनि भीखण ने जब सुना, तो इसे यह कहकर स्वीकार करलिया - 'हे प्रभो ! यह तेरापंथ' ।

मुनि भीखण आषाढ़ में मेवाड़ पधारे । विचरते-विचरते वे केलवा पधारे । रहने के लिए लोगों ने चंद्रप्रभ प्रभु का मंदिर बताया । वे पाँच साधुओं के साथ वहां पधार गये । वहां यक्ष का उपद्रव था । यक्ष सांप रूप में मुनि भारमल जी के पैरों में लिपटा, बाद में मुनि भीखण ने उससे बातचीत की, यक्ष ने वहाँ रहने की प्रार्थना की । आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन, सायं प्रतिक्रमण के बाद मुनि भीखण ने पुनः दीक्षा अंगीकार की । इसी के साथ तेरापंथ की विधिवत् स्थापना हो गई । मुनि भीखण आचार्य भिक्षु बन गये ।

उस चातुर्मास में केलवा का पूरा जैन समाज व ठाकुर मोखमसिंह जी उनके अनुयायी बन गये । चातुर्मास के बाद वे केलवा से प्रस्थित हो गए । भारी विरोध, स्थान की कमी, आहार-पानी की बहुत मुश्किल से प्राप्ति होने के बावजूद वे डिगे नहीं । सूखी नदियों की रेत में आतापना ली । संघ के प्रथम संत मुनि थिरपाल जी व फतेहचंद जी के निवेदन पर आचार्य भिक्षु लोगों को तत्त्व समझाने लगे ।

मुनि सुमेरमल (लाडनूं)

विघ्न हरण मंगल करण, स्वाम भिक्षु रो नाम ।
गुण ओलख सुमिरण करै, सरै अचिन्त्या काम ॥

प्रकाशक

मित्र परिषद्

115, ए चित्तरंजन एवेन्यु, कोलकाता - 700 073

फोन : 22352481, 22357935

मुख्य प्रवृत्तियां

- वातानुकूल प्रेक्षाध्यान केन्द्र
- होमियोपेथी व शिशु चिकित्सा केन्द्र
- अस्थि चिकित्सा केन्द्र
- सिलाई - बुनाई प्रशिक्षण केन्द्र
- समृद्ध पुस्तकालय
- विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति
- विशाल बर्तन भंडार
- असहायों को सहायता
- साहित्य सेवा

संपादक

मुनि उदितकुमार

संस्करण : द्वितीय

आचार्य भिक्षु निर्वाण द्विशताब्दी वर्ष

– अभिवन्दना कर्ता –

श्रीचन्द, उम्मेदसिंह, विजयसिंह मोहोनोत

(डीडवाना)

जयग्रुप ओफ इन्डस्ट्रीज

नं 3 एवं 5, चार्ल्स केम्पबेल रोड़

कोक्स टॉउन, बेंगलोर-560 005

फोन : 25483508 / 25483908

मोबाईल : 98452 12363 / 98450 40099, 20099

मुद्रक :- श्री ऑफसेट प्रिन्टर्स, बेंगलोर-53. फोन : 5699 2695 मोबाईल : 98440 06655
श्रीनिवासा प्रिन्टर्स, बेंगलोर-53. फोन : 23356888

मूल्य : रु ३५/-

क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु

तेरापंथ - स्थापना

पूज्य जयमल जी महाराज मुनि भीखण के चाचा गुरु थे। वे भीखण जी पर बहुत वत्सलता रखते थे। भीखण जी उनके पास गये। दोनों की बातें सौहार्दपूर्ण रहीं, मगर वह भीखण जी के साथ आने को तैयार नहीं हुए।

रघुनाथ जी से अलग हो जाने पर भी भीखण जी की इच्छा अपना टोला बनाने की नहीं थी, वे सिर्फ साधना करना चाहते थे। उनके पास आने वाले कुल चौदह साधु हो गये। मुनि भीखण उन सबको परख-परख कर हां भरने लगे।

बाल मुनि भारमल जी के पिता किशनो जी मुनि भीखण की परख में खरे नहीं उतर रहे थे ।

भीखण जी ने भारमल जी से पूछा -

मुनि भीखण ने किशनो जी से कहा -

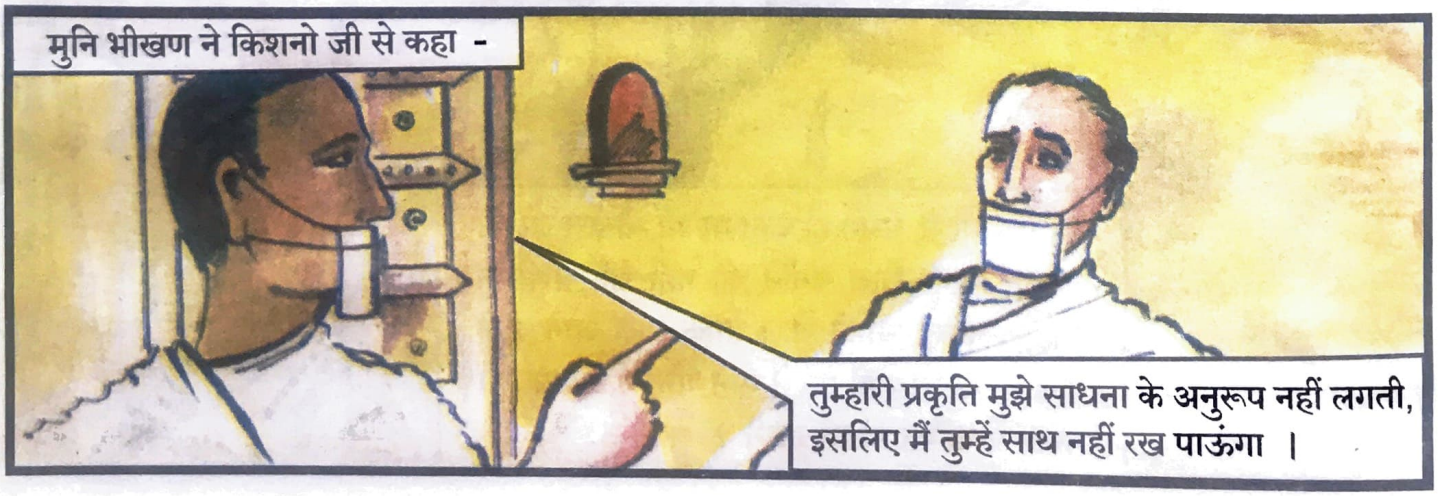

यदि आप मुझे नहीं रख सकते तो मैं अपने पुत्र भारमल को भी साथ ले जाऊँगा ।

यह रहा तुम्हारा पुत्र, तुम्हारे साथ यह जाना चाहता है कि नहीं, यह तो जानकारी कर लो ।

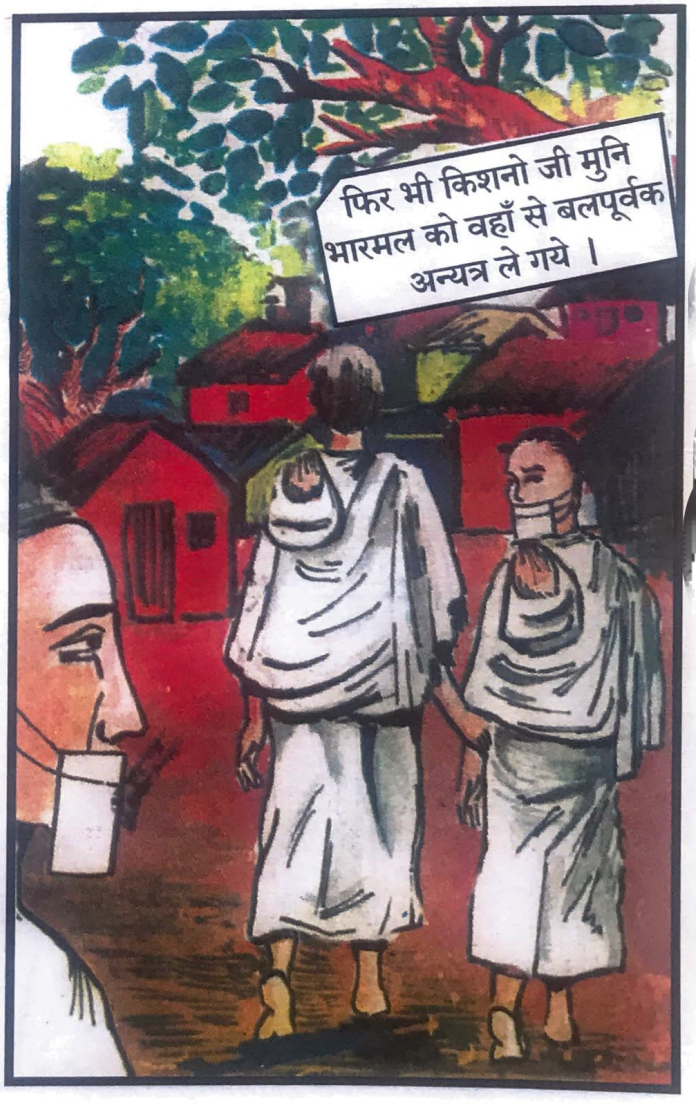
फिर भी किशनो जी मुनि भारमल को वहाँ से बलपूर्वक अन्यत्र ले गये ।

मैं गुरुदेव भीखण स्वामी के पास ही अन्न-जल ग्रहण करूँगा, वरना प्रत्याख्यान है।

किशनो जी ने बहुत आग्रह किया नर्म-गर्म भी हुए, परन्तु बालमुनि पर इसका कोई असर नहीं हुआ । वे अपने निर्णय पर अटल रहे ।

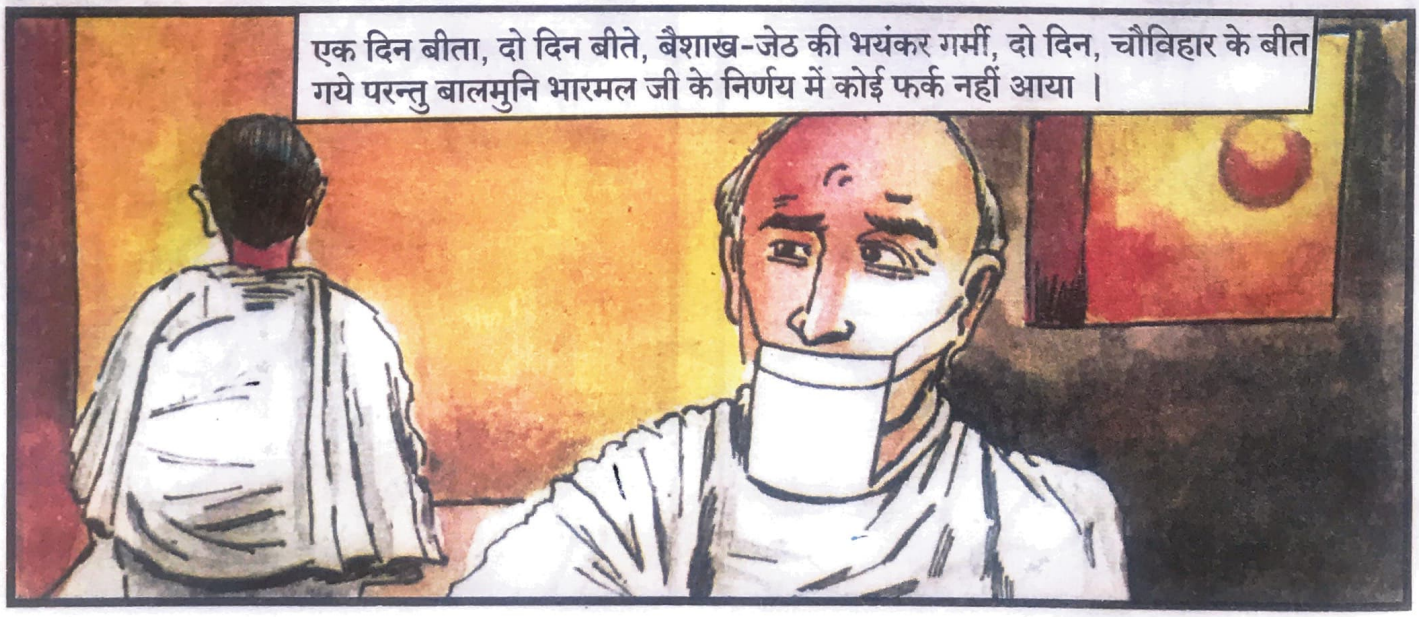
एक दिन बीता, दो दिन बीते, बैशाख-जेठ की भयंकर गर्मी, दो दिन, चौविहार के बीत गये परन्तु बालमुनि भारमल जी के निर्णय में कोई फर्क नहीं आया ।

अन्त में पितृ हृदय पिघल गया । किशनो जी भारमल स्वामी को मुनि भीखण के पास ले गये ।

तभी से बालमुनि भारमल गुरु भीखण के साथ साधना के प्रत्येक चरण में छाया की भाँति रहे ।

मुनि भीखण के अभिनिष्क्रमण से पूरे जैन समाज में खलबली मच गयी । जानकार व्यक्तियों की प्रतिक्रिया अनुकूल हुई...

...तथा अज्ञानी और दिग्भ्रमित व्यक्तियों की प्रतिक्रिया प्रतिकूल हुई ।

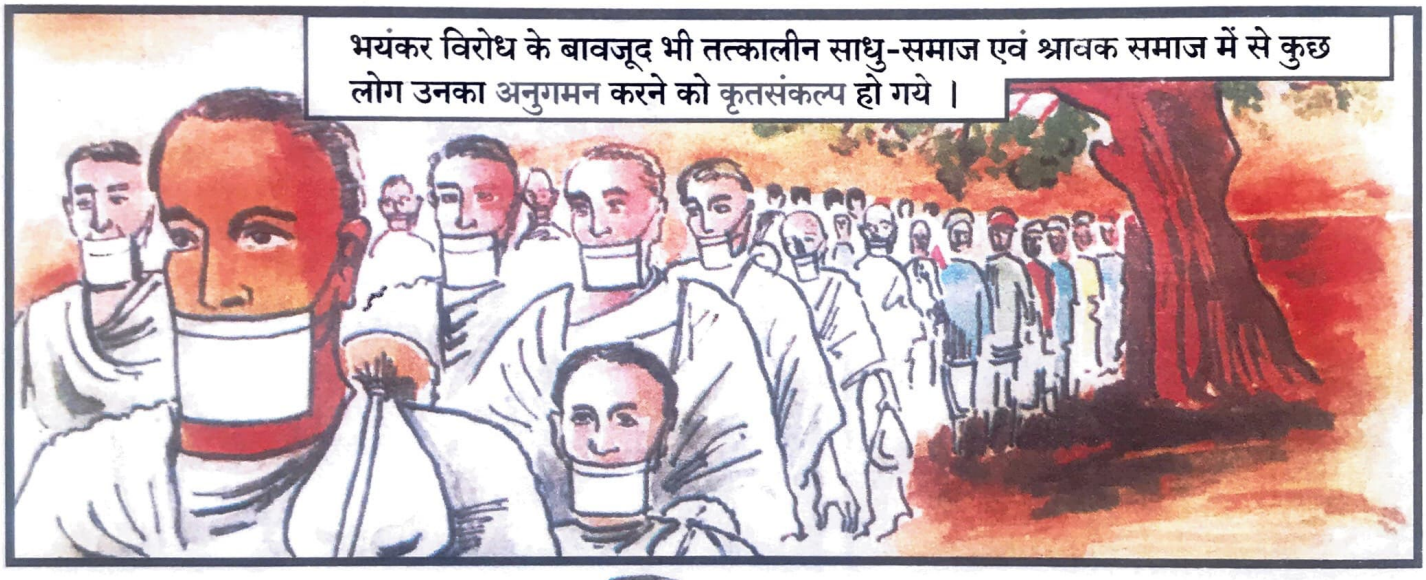
भयंकर विरोध के बावजूद भी तत्कालीन साधु-समाज एवं श्रावक समाज में से कुछ लोग उनका अनुगमन करने को कृतसंकल्प हो गये ।

चैत्र से लेकर आषाढ़ तक मुनि भीखण खूब घूमे । अनेक आचार्यों एवं मुनियों से मिले ।

सभी ने मुनि भीखण की बात से सहमति तो प्रकट की, परन्तु सुविधाग्रस्त होने के नाते उनके साथ आने में लाचारी दिखाई ।

मुनि भीखण के प्रति विरोध का स्वर क्रमशः बुलन्द होता चला गया । जगह-जगह गाँवों में सामाजिक स्तर पर प्रस्ताव पारित किए गये । मुनि भीखण को रहने हेतु स्थान मत दो, गोचरी मत दो, उनके पास मत जाओ आदि ।

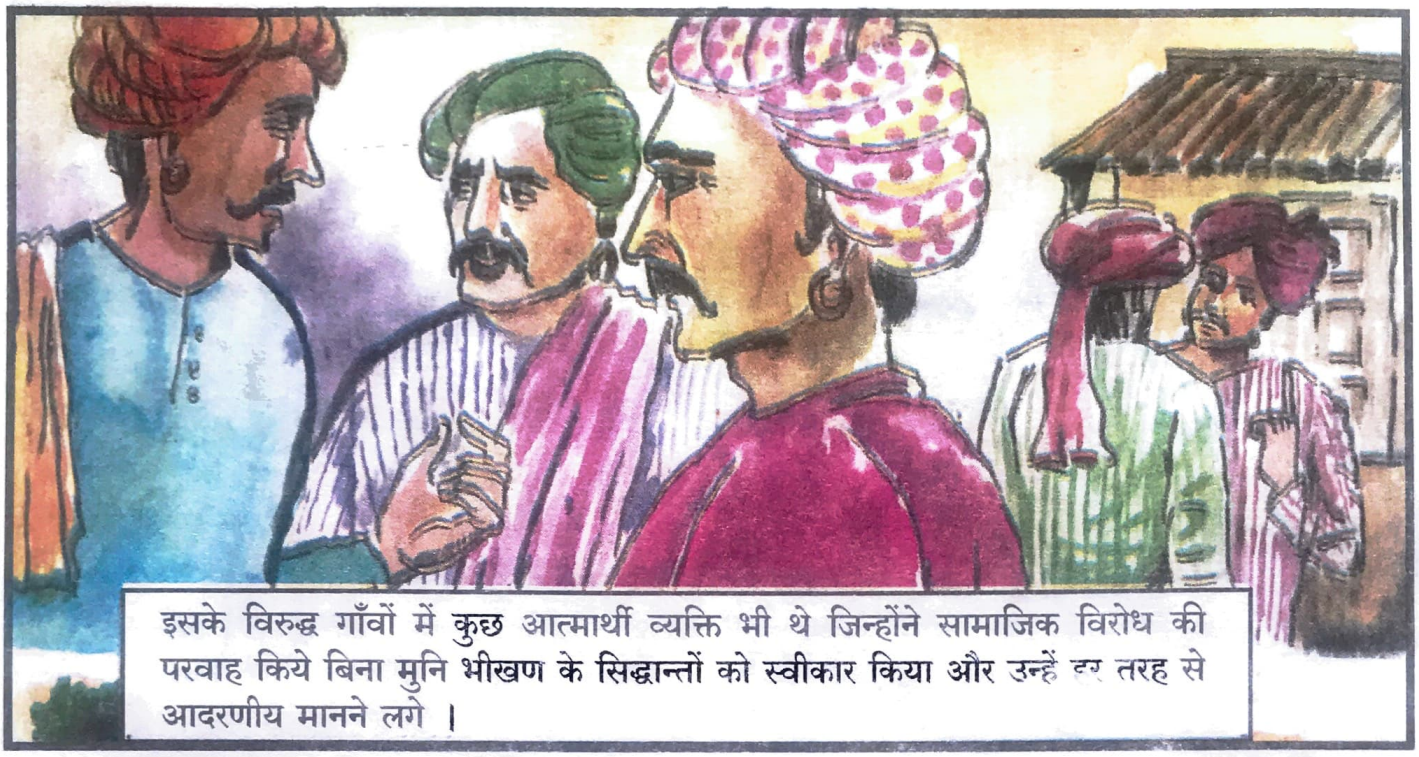

इसके विरुद्ध गाँवों में कुछ आत्मार्थी व्यक्ति भी थे जिन्होंने सामाजिक विरोध की परवाह किये बिना मुनि भीखण के सिद्धान्तों को स्वीकार किया और उन्हें हर तरह से आदरणीय मानने लगे ।

ऐसे ही कुछ श्रावक जोधपुर के थे । उन्होंने स्थानक जाना छोड़कर बाजार में दुकानों पर ही सामायिक करना शुरु कर दिया ।

एक दिन जब वे सामायिक कर रहे थे तो जोधपुर के दीवान फतेहमलजी सिंघवी उधर से निकले ।

हमारे गुरु ने स्थानक छोड़ दिया है ।
अरे! आज यहाँ सामायिक कैसे कर ली ?

दीवान जी श्रावकों की बातचीत सुनने हेतु बरामदे में आ गये ।
साध्य शुद्धि के साथ साधन शुद्धि भी आवश्यक है । धर्म प्रलोभन या बलात् से नहीं होता, हृदय परिवर्तन से होता है । दीवान जी ! जिस कार्य को करने में पाप है उसे करवाने या अनुमोदन करने में भी पाप है ।
किन बातों को लेकर स्थानक छोड़ा?

अपने लिए बने स्थानक में ठहरना, फर्जी माँ-बाप बनाकर चेलों को खरीदना, क्या साध्वाचार है! हमारे गुरु ने इस पर पाबन्दी लगा दी है ।

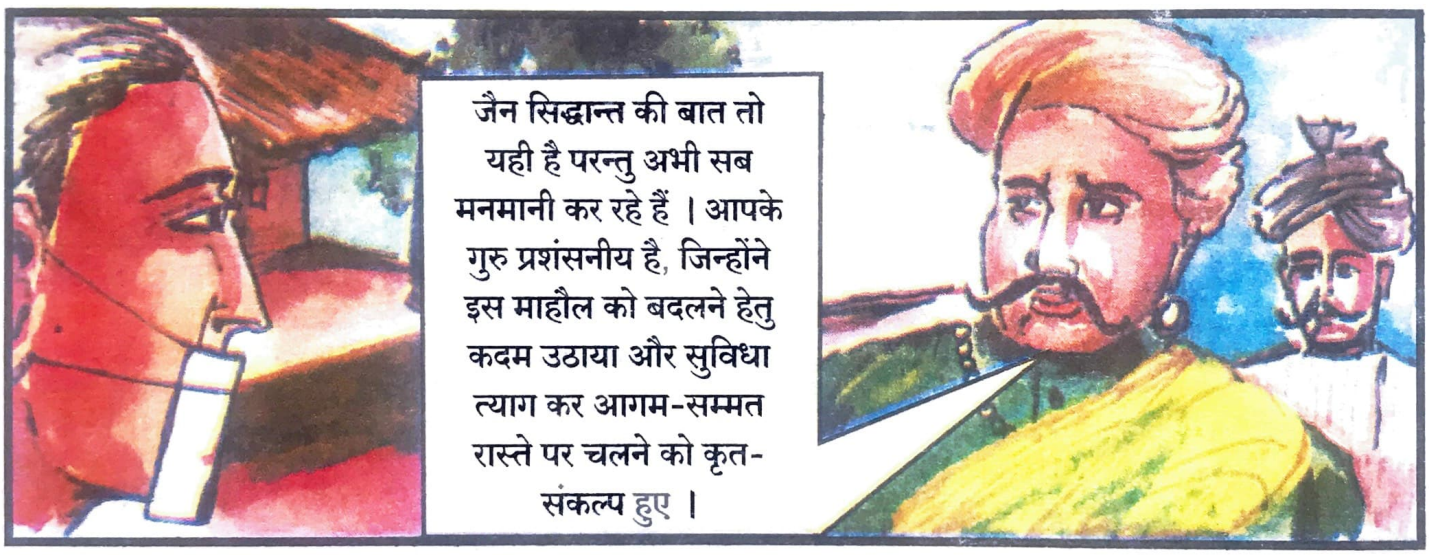
जैन सिद्धान्त की बात तो यही है परन्तु अभी सब मनमानी कर रहे हैं । आपके गुरु प्रशंसनीय है, जिन्होंने इस माहौल को बदलने हेतु कदम उठाया और सुविधा त्याग कर आगम-सम्मत रास्ते पर चलने को कृत-संकल्प हुए ।

इतने में ही दीवान जी को दूसरी बात सूझी -
अच्छा, भीखण जी स्वामी अभी कितने संत हैं?

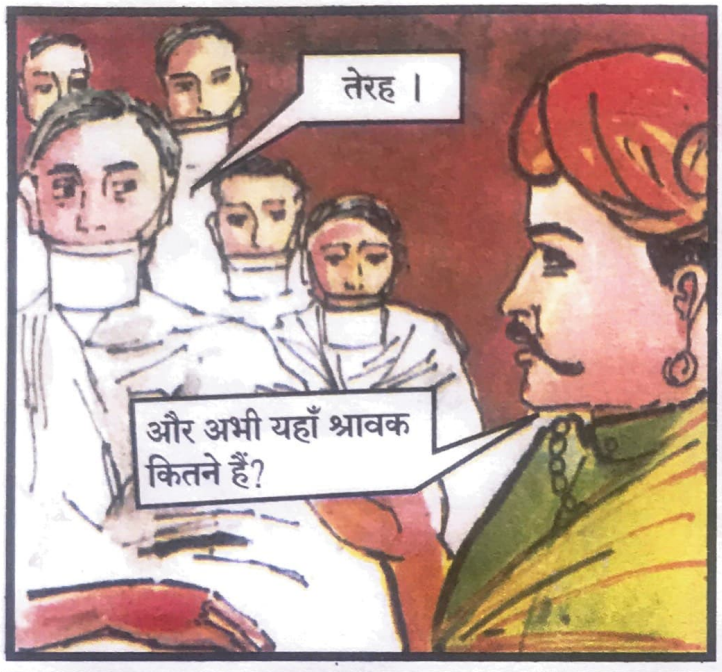

एक श्रावक ने सबकी संख्या गिनी तो वह तेरह ही आई ।

दीवान जी के पास ही एक सेवक जाति का व्यक्ति खड़ा था । वह तुकबंदी भी किया करता था । यह सुनकर वह बोल उठा -

साध, साध रो गिलो करै, ते आप, आप रो मंत ।
सुणज्यो रे शहर रा लोकां, ये तेरापंथी तंत ।।

यह बात सुनते ही सब बोल पड़े - "यही ठीक है ।" बात चारों तरफ फैली । जिसने भी सुना 'तेरापंथी' नाम से पुकारा ।

मारवाड़ के जैन लोग व्यापारार्थ जोधपुर आया-जाया करते थे । उनके साथ यह नाम अन्यत्र भी पहुंच गया । और जगहों पर भी चर्चा होने लगी ।

पांच महाव्रत	पांच समिति	तीन गुप्ति
अहिंसा	ईर्या	
सत्य	भाषा	मन
अचौर्य	एषणा	वचन
ब्रह्मचर्य	आदान निक्षेप	शरीर
अपरिग्रह	उत्सर्ग	

इन तेरह नियमों का पालन करने वाले तेरापंथी साधु-साध्वी । इन्हें गुरु मानने वाले तेरापंथी श्रावक श्राविकाएं ।

उधर तो अचिंतित ही मुनि भीखण के मत का नाम तेरापंथ पड़ गया। साथ-साथ विरोध भी उग्र हो गया ।

इन्हीं दिनों चातुर्मास के लिए स्थान की आवश्यकता महसूस हुई । मुनि भीखण ने अपने सहवर्ती संतों सहित इस प्रयोजन से मेवाड़ की ओर प्रस्थान किया ।

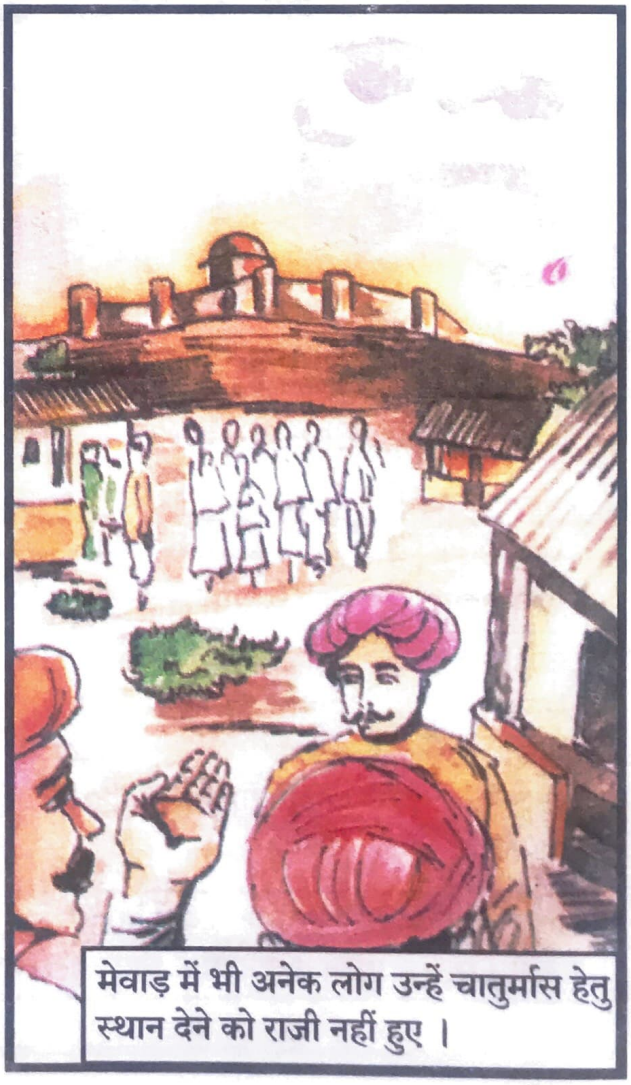

मेवाड़ में भी अनेक लोग उन्हें चातुर्मास हेतु स्थान देने को राजी नहीं हुए ।

चातुर्मास के पश्चात् हम सभी वापस मिलेंगे, तत्त्व चर्चा करेंगे, आचार-विचार मिल गया तभी साथ रहेंगे ।
वहाँ सभी संतों ने यह तय किया कि चातुर्मास एक गाँव की बजाय **अलग**-अलग गाँवों में करना होगा ।

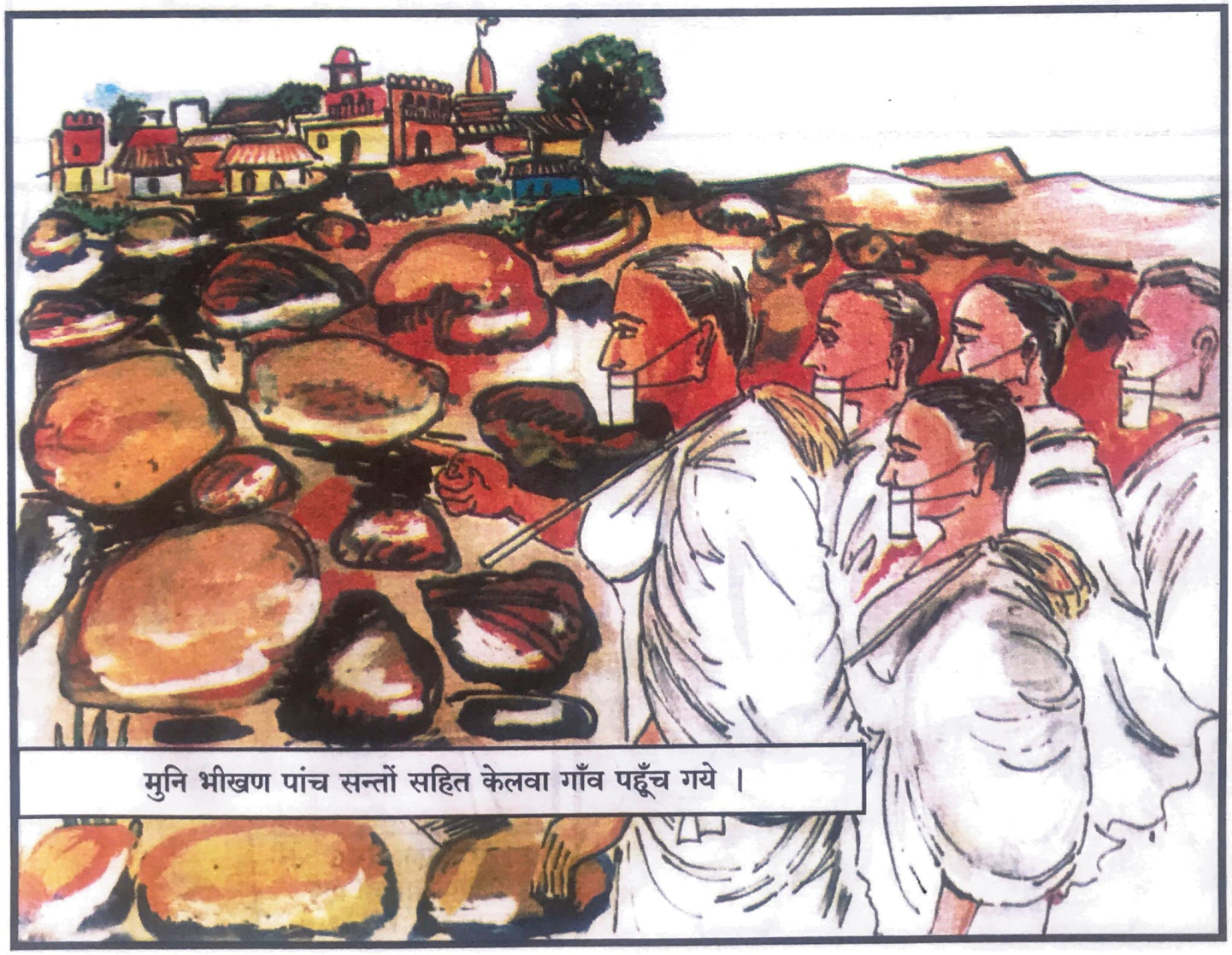
मुनि भीखण पांच सन्तों सहित केलवा गाँव पहुँच गये ।

चातुर्मास हेतु बाजार में स्थान की गवेषणा की परन्तु हर किसी ने स्थान देने से मना किया ।

यही नहीं लोगों ने उनकी खूब खिल्ली भी उड़ाई ।

तभी कुछ पंच उधर से आये । उन्होंने संतों को भगवान चन्द्रप्रभ मन्दिर में रहने की अनुमति दी ।

मन्दिर में एक अंधेरी ओरी है । आप चाहें तो वहाँ रह सकते हैं ।

मुनि भीखण सहित सभी सन्त चन्द्रप्रभ मन्दिर पहुँचे । कहते हैं वहाँ पहले से किसी यक्ष का उपद्रव था । चन्द्रप्रभ मन्दिर का स्थान बताने वालों का भी यही अभिप्राय था । वे सोचते थे कि यदि ये साधु पक्के हुए, तो यक्ष इनकी उपस्थिति में उपद्रव बन्द कर देगा और यदि कच्चे हुए तो खुद ही रात में भाग खड़े होंगे ।

सबने चन्द्रप्रभ मन्दिर के भीतर प्रवेश किया ।

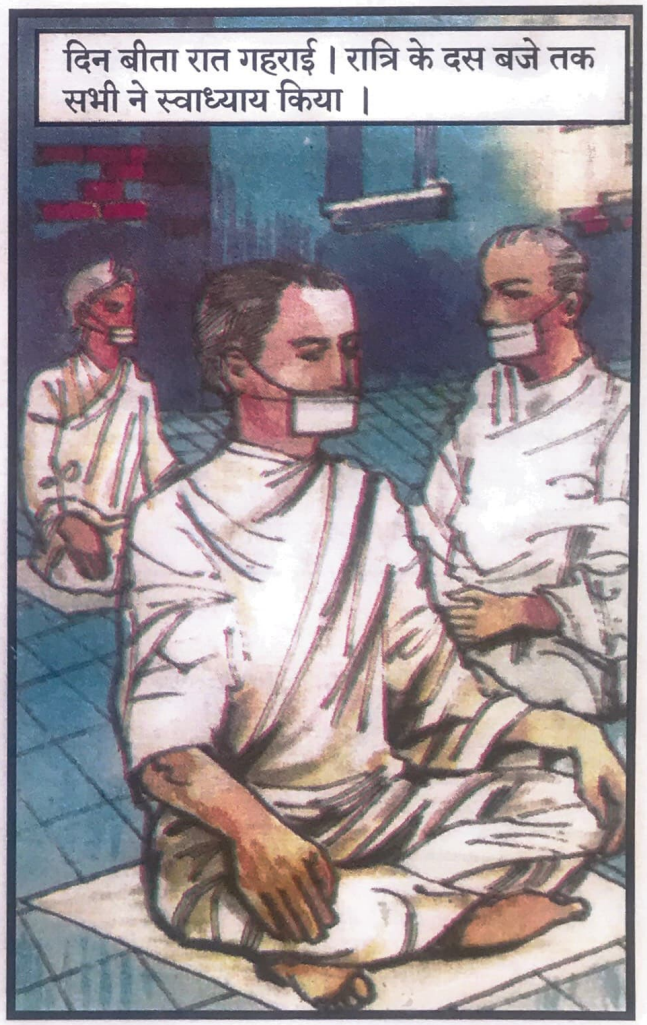
दिन बीता रात गहराई । रात्रि के दस बजे तक सभी ने स्वाध्याय किया ।

इसके उपरान्त बालमुनि भारमल जी परिष्ठापन हेतु बाहर आये ।

वापस आते समय एक नाग उनके पैरों में लिपट गया । उधर समय पर न आने पर मुनि भीखण ने आवाज दी ।

बाहर क्यों खड़ा है ? रात्रिकाल में बाहर नहीं रहना चाहिए ।

गुरुदेव! सर्प जाति के एक जन्तु ने पैरों को जकड़ रखा है, इसलिए आने में असमर्थ हूँ ।

इस पर मुनि भीखण स्वयं दरवाजे तक आये नवकार मंत्र व मंगलपाठ सुनाते हुए बोले -

मुनि भीखण का इतना कहना था कि सर्प अदृश्य हो गया ।

महानुभाव! ग्रामवासियों की अनुमति से हम यहाँ आये हैं ।

फिर भी यदि आपको कुछ कहना है तो मुझसे कहें ।

इस प्रकार बाल मुनि के पैरों में लिपटना उचित नहीं ।

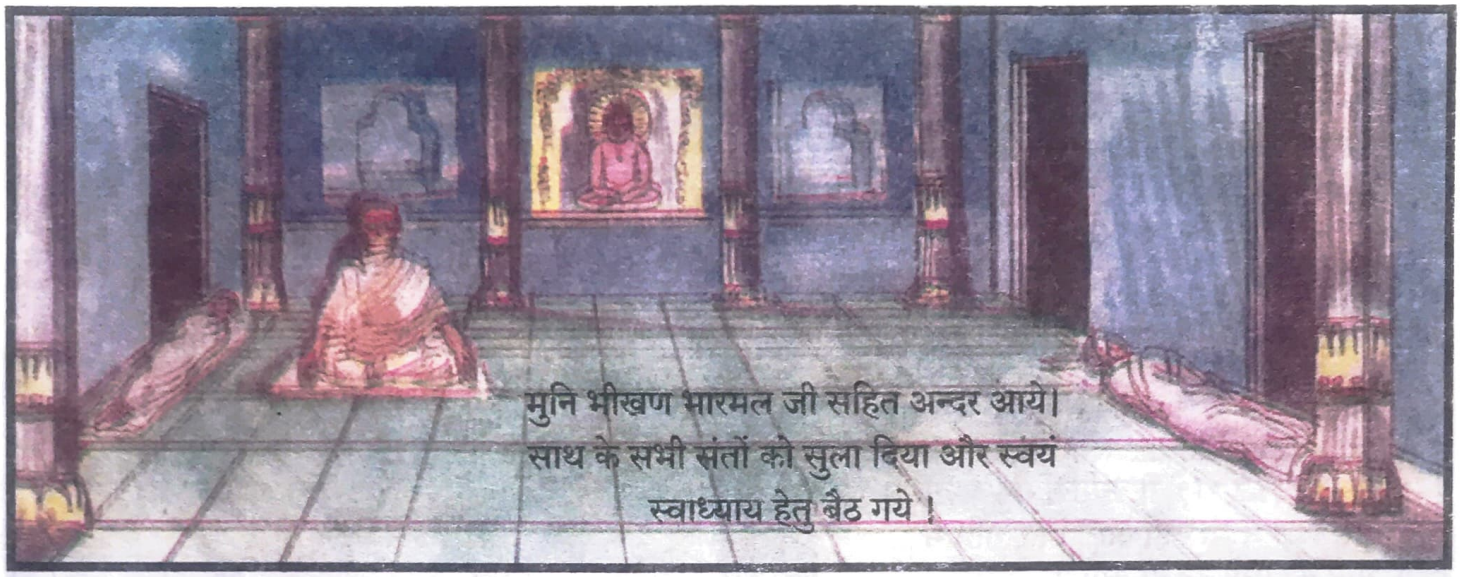
मुनि भीखण भारमल जी सहित अन्दर आये।
साथ के सभी संतों को सुला दिया और स्वयं
स्वाध्याय हेतु बैठ गये ।

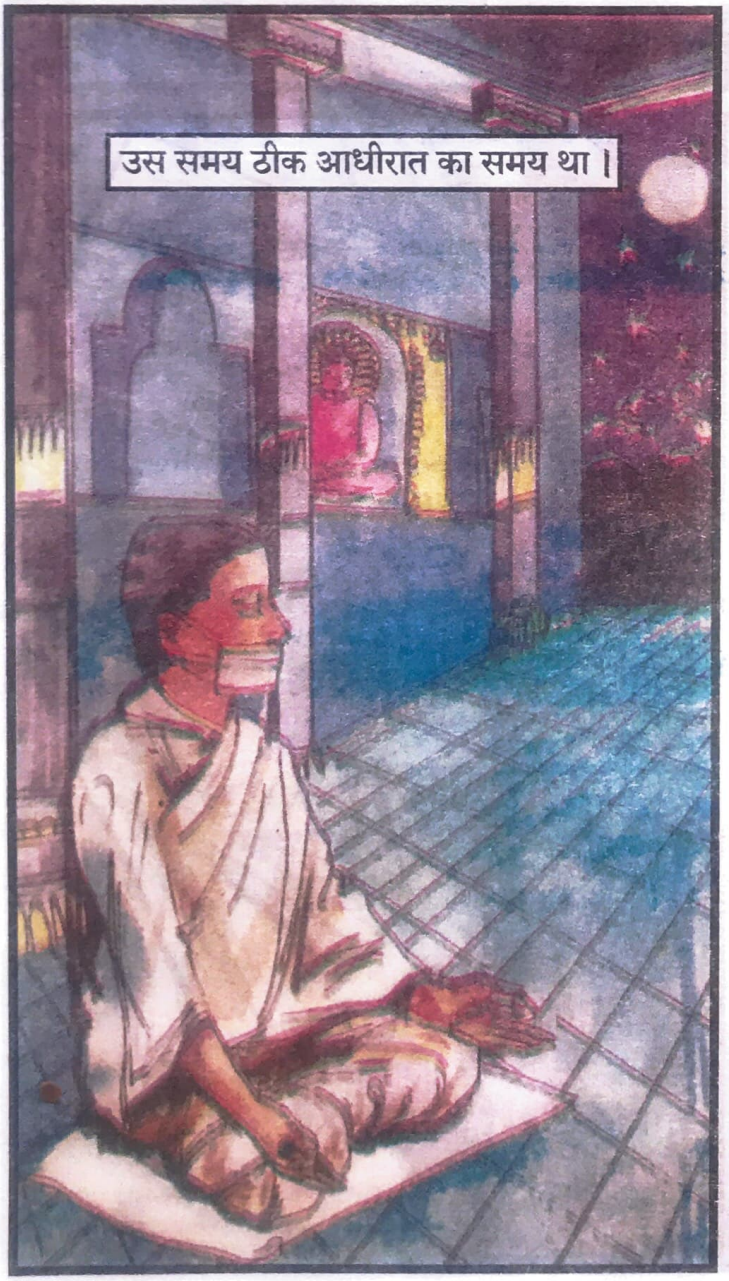
उस समय ठीक आधीरात का समय था ।

अकस्मात् एक दिव्य छवि प्रकट हुई
और मुनि भीखण के समीप आकर बोली
मैं मनुष्य नहीं हूँ महाराज !

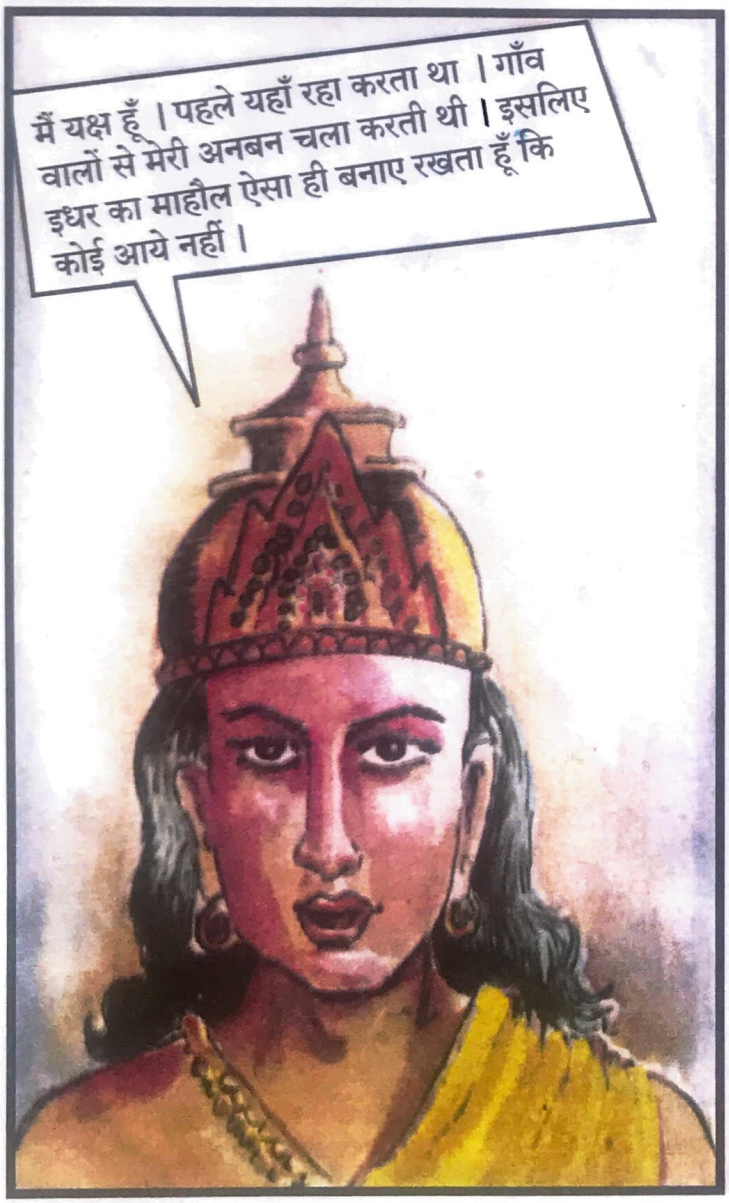

वह तो प्रकट ही है । क्योंकि मनुष्य तो मेरे पास दिन में भी नहीं आते फिर रात्रि में आने का प्रयोजन ही क्या ?
मैं यक्ष हूँ । पहले यहाँ रहा करता था । गाँव वालों से मेरी अनबन चला करती थी । इसलिए इधर का माहौल ऐसा ही बनाए रखता हूँ कि कोई आये नहीं ।
हमें तो यहाँ चातुर्मास करना है । लोग भी आयेंगे ही । यदि यह रुचिकर न हो तो हमलोग सुबह होते कोई और स्थान तलाश कर लें ।

नहीं महाराज, आप यहां सहर्ष रहें । आपका रास्ता सही है । एक दिन लोग उसका अनुसरण करेंगे ।
यदि कोई और सावधानी बरतने की बात हो तो कहो ।
मूल मन्दिर के बाहर दो चौकियां बनी हुई हैं । उन पर और कोई न बैठे । आप चाहें तो बैठ सकते हैं । आपके साधु यदि परिष्ठापन के लिए बाहर जाते हैं तो उधर की तरफ न जाएं तो अच्छा रहेगा । मेरा उधर आना जाना रहता है ।
रात्रि का समय है, उधर कितनी दूर तक नहीं जाना, इसका पता कैसे चले ?

सवेरे सूर्योदय के समय एक श्वेत सर्प निकलेगा वह जिस रास्ते से जायेगा उससे आगे नहीं जायें ।
ठीक है !
यक्ष वन्दन करता हुआ अन्तर्धान हो गया ।
दूसरे दिन सुबह सफेद सर्प निकला, मुनि भीखण ने अपने संतों से कहा -
इस सर्प के जाने से जो लकीर बनी है उससे आगे कदम रखने की मेरी आज्ञा नहीं है ।
दूसरे दिन लोगों ने मुनि भीखण सहित सभी संतों को सही सलामत पाया तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा ।
साधु हैं तो करामाती, नहीं तो रात्रि में ही भाग खड़े होते ।

गाँव भर में यह बात फैली, लोग चन्द्रप्रभ मन्दिर की ओर धीरे-धीरे आने लगे।

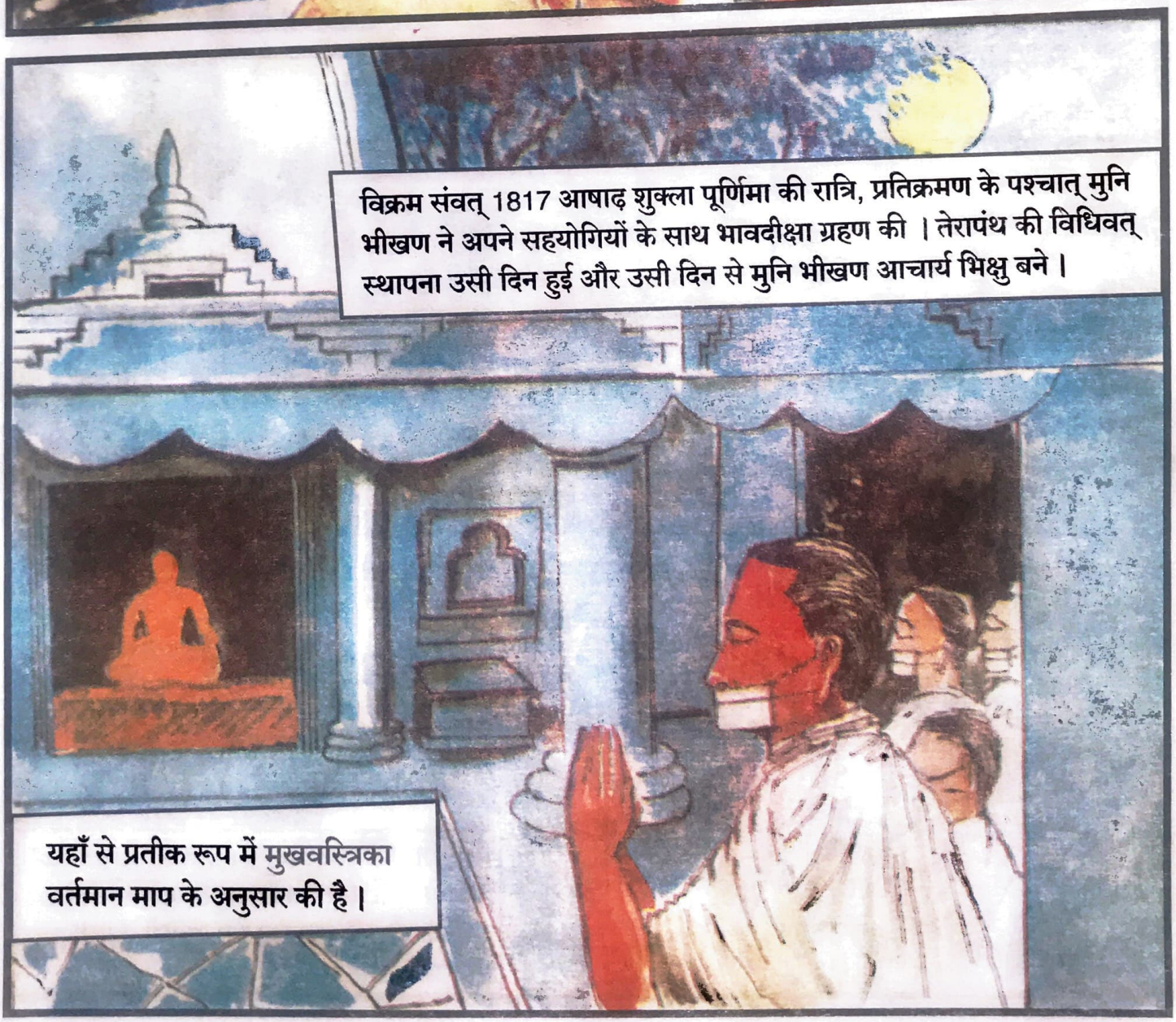
विक्रम संवत् 1817 आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा की रात्रि, प्रतिक्रमण के पश्चात् मुनि भीखण ने अपने सहयोगियों के साथ भावदीक्षा ग्रहण की। तेरापंथ की विधिवत् स्थापना उसी दिन हुई और उसी दिन से मुनि भीखण आचार्य भिक्षु बने।
यहाँ से प्रतीक रूप में मुखवस्त्रिका वर्तमान माप के अनुसार की है।

इस चातुर्मास के दौरान अनेक बार यह देखा गया कि यक्षदेव सर्प के रूप में, व्याख्यान करते हुए आचार्य भिक्षु के समीप की दूसरी चौकी पर आकर बैठ जाते और अन्य अनुयायियों के साथ ही प्रवचन का आनन्द लेते।

कहा जाता है कि आचार्य भिक्षु भाव दीक्षा के बाद प्रथम दान के लिए ठाकुर मोखम सिंह जी के महल में गये जहाँ ठाकुर साहब ने उन्हें दान दिया।

धीरे-धीरे आचार्य भिक्षु की बातें लोगों के समझ में आने लगीं। वे उनका अनुसरण करने लगे। कार्तिक मास के व्याख्यान में अच्छी-खासी भीड़ होने लगी।

केलवा का पूरा जैन समाज तेरापंथी बन गया । वहाँ के ठाकुर मोखमसिंह जी ने भी तत्व समझा, तेरापंथी बन गये ।

भक्त बने तो इतने निष्ठावान कि बारिश में भी एक दिन व्याख्यान सुनने हेतु निकल पड़े ।

रास्ते में बारिश से कीचड़ हो गया । उसे पार करना मुश्किल था ।

उनके अंगरक्षक क्षत्रिय ने अपनी ढाल उस पर रख दी, तब मोखम जी उसे पार कर सके...

.... और कहीं व्याख्यान सुन सके ।
आज तुम्हारे ही कारण व्याख्यान सुन सका ।
इस बात से ठाकुर साहब इतने प्रसन्न हुए कि अंगरक्षक को एक गाँव बख्शीश में दे दिया ।
शुरु-शुरु में आचार्य भिक्षु का विरोध खूब हुआ । लोग उन्हें जगह नहीं देते थे । भोजन-पानी नहीं देते थे । और मौके-बेमौके ताने भी कसते थे ।
गोचरी में घी-गुड़ तो आता होगा ?
पाली के बाजार में बिकते हुए देखता हूँ ।

* रहने का स्थान न मिलने के कारण छाछ, राबड़ी, धोवन पानी लेकर जंगल की ओर चले जाते।

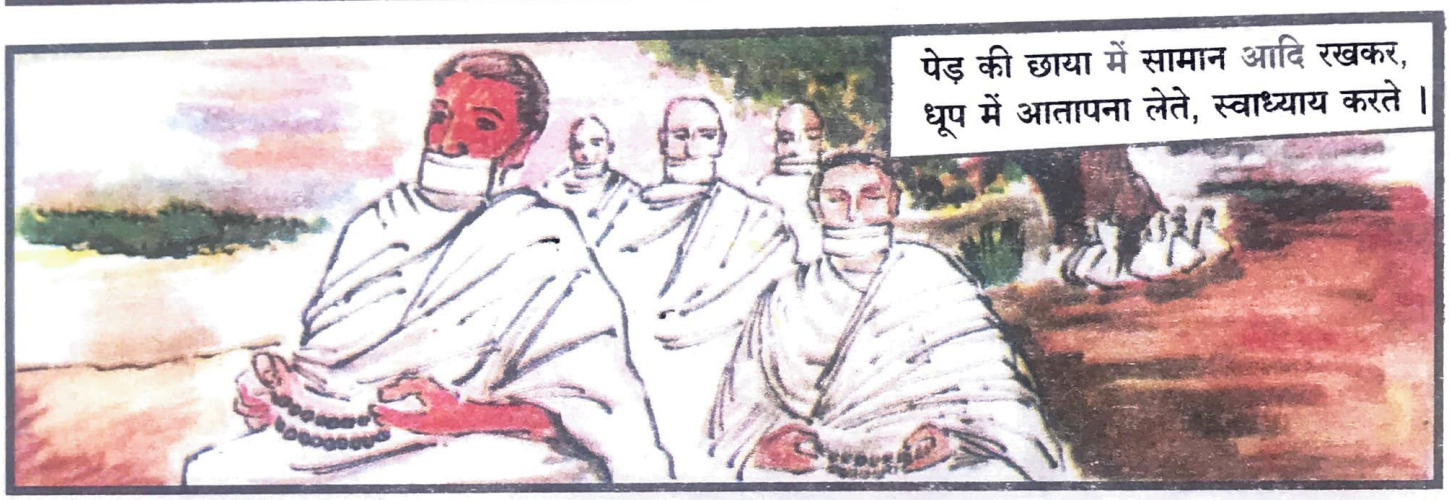
पेड़ की छाया में सामान आदि रखकर, धूप में आतापना लेते, स्वाध्याय करते।

* सायंकाल गाँव में आ जाते, किसी की दुकान के बरामदे में पूछकर स्थान पा लेते। रात बिताकर फिर जंगल चले जाते।

लोग आचार्य भिक्षु को सुनना चाहते थे। वे व्याख्यान देते, संत तो पास में बैठकर व्याख्यान सुनते, परन्तु लोग कुछ दूर पर अपनी दुकानों में बैठ जाते और श्रवण का आनन्द लेते।

लोगों को आचार्य भिक्षु का व्याख्यान अच्छा भी लगता लेकिन पास में बैठ कर सुनने से डरते थे, क्योंकि धर्म के ठेकेदार उनसे टोकाटाकी करते ।

कुछ लोग अपनी शंका-समाधान हेतु जंगल में चले जाते और वहाँ तत्त्व समझते ।

एक दिन तेरापंथके सबसे बड़े संत थिरपाल जी एवं उनके पुत्र फतेहचंद जी आचार्य भिक्षु के पास आये ।

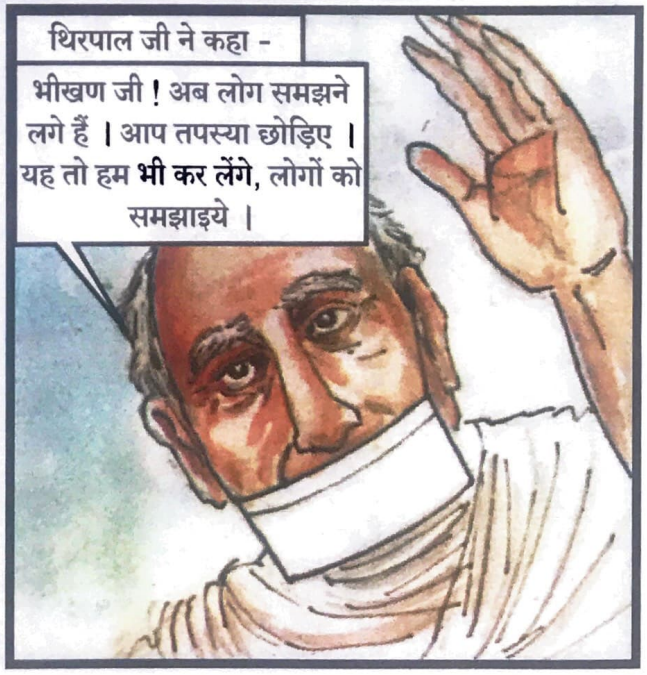
थिरपाल जी ने कहा -
भीखण जी ! अब लोग समझने लगे हैं । आप तपस्या छोड़िए । यह तो हम भी कर लेंगे, लोगों को समझाइये ।

सन्तों के कहने पर आचार्य भिक्षु ने एकान्तर तप छोड़ा और लोगों को समझाने लग गये।
एक बार आचार्य भिक्षु अरावली की घाटियों से होकर देसूरी (मारवाड़) जा रहे थे।

इतने में एक व्यक्ति सामने से आया, वंदना की तो आचार्य भिक्षु ने 'जी' कहकर उत्तर दिया।

आगंतुक चौंका, तपाक से पूछ बैठा -
कौन भीखण जी, तेरापंथी !
मेरा नाम भीखण है, मैं तेरापंथी हूँ।

गजब हो गया, आज अनजाने में तुम्हारा मुंह दिख गया, नरक में जाना पड़ेगा ।
क्यों क्या ? तुम्हारा मुँह देखने वाले को नरक मिलता है - नरक !
क्यों ?
और तुम्हारा मुंह देखने वाले को ..... ?
मेरा मुंह देखने वाले को स्वर्ग मिलता है-स्वर्ग !
मैं ऐसा नहीं मानता कि किसी का मुँह देखने से स्वर्ग मिलता हो, लेकिन तुम्हारी मान्यता के अनुसार मुझे तो स्वर्ग ही मिलना चाहिए क्योंकि मैंने तुम्हारा मुँह देखा है ।
आगंतुक बगलें झाँकने लगा -
एक बार आचार्य भिक्षु किशनगढ़ के पंड्या-वास में गोचरी हेतु गये ।

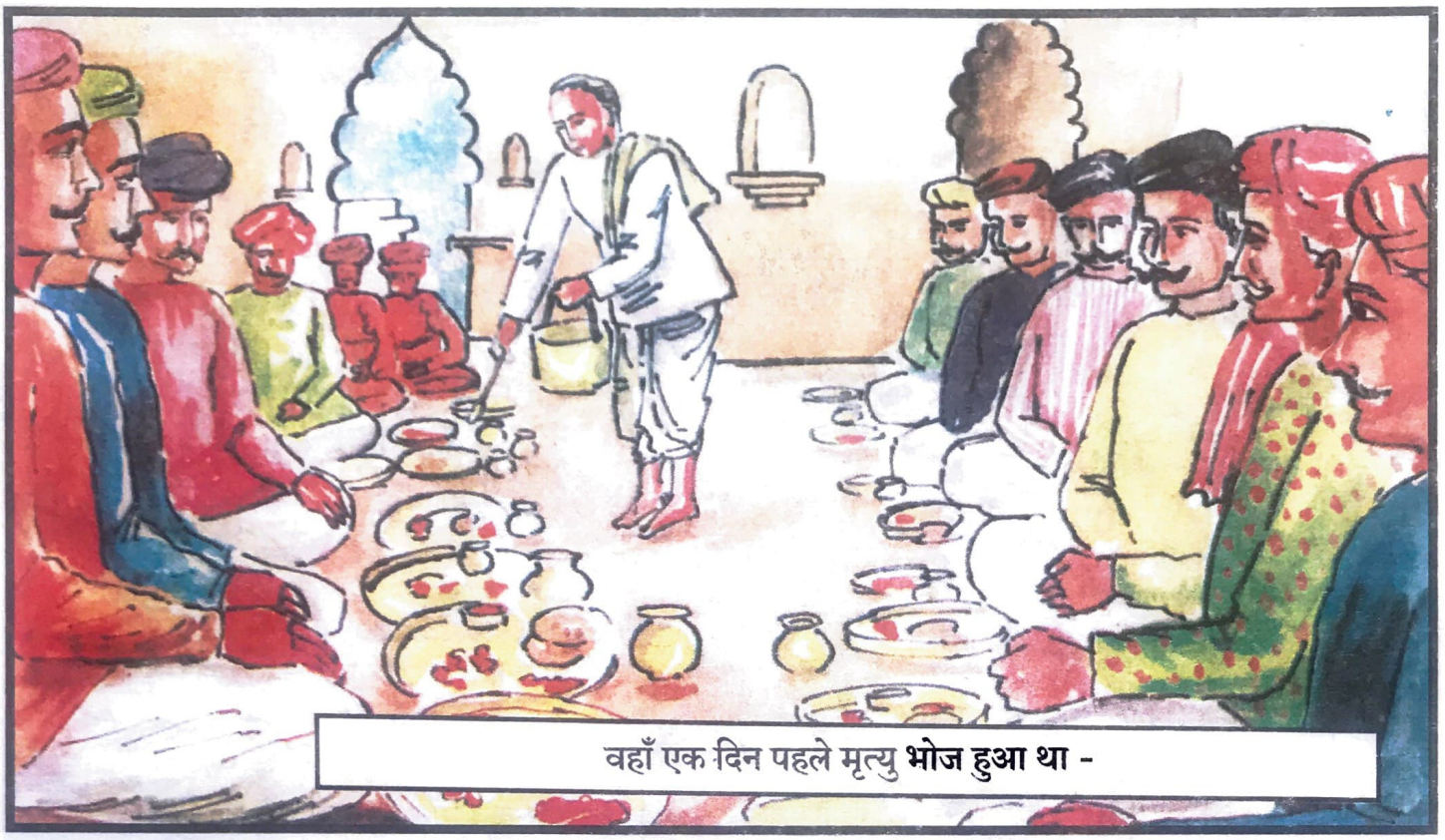
वहाँ एक दिन पहले मृत्यु भोज हुआ था -

भीखण जी तो उधर गये लेकिन दूसरी तरफ उनके विरोधियों ने योजना बनाई कि आज भीखण जी 'ओशर' के लड्डू लेने गये हैं, लेकर वापस लौटें तो इनका भण्डा फोड़ किया जाए । ये एक तरफ तो निषेध करते हैं दूसरी तरफ खुद उसी रास्ते पर चलते हैं ।

जैसे ही आचार्य भिक्षु वापस लौटे, लोगों ने उन्हें घेर लिया और तरह-तरह से सवाल करने लगे -

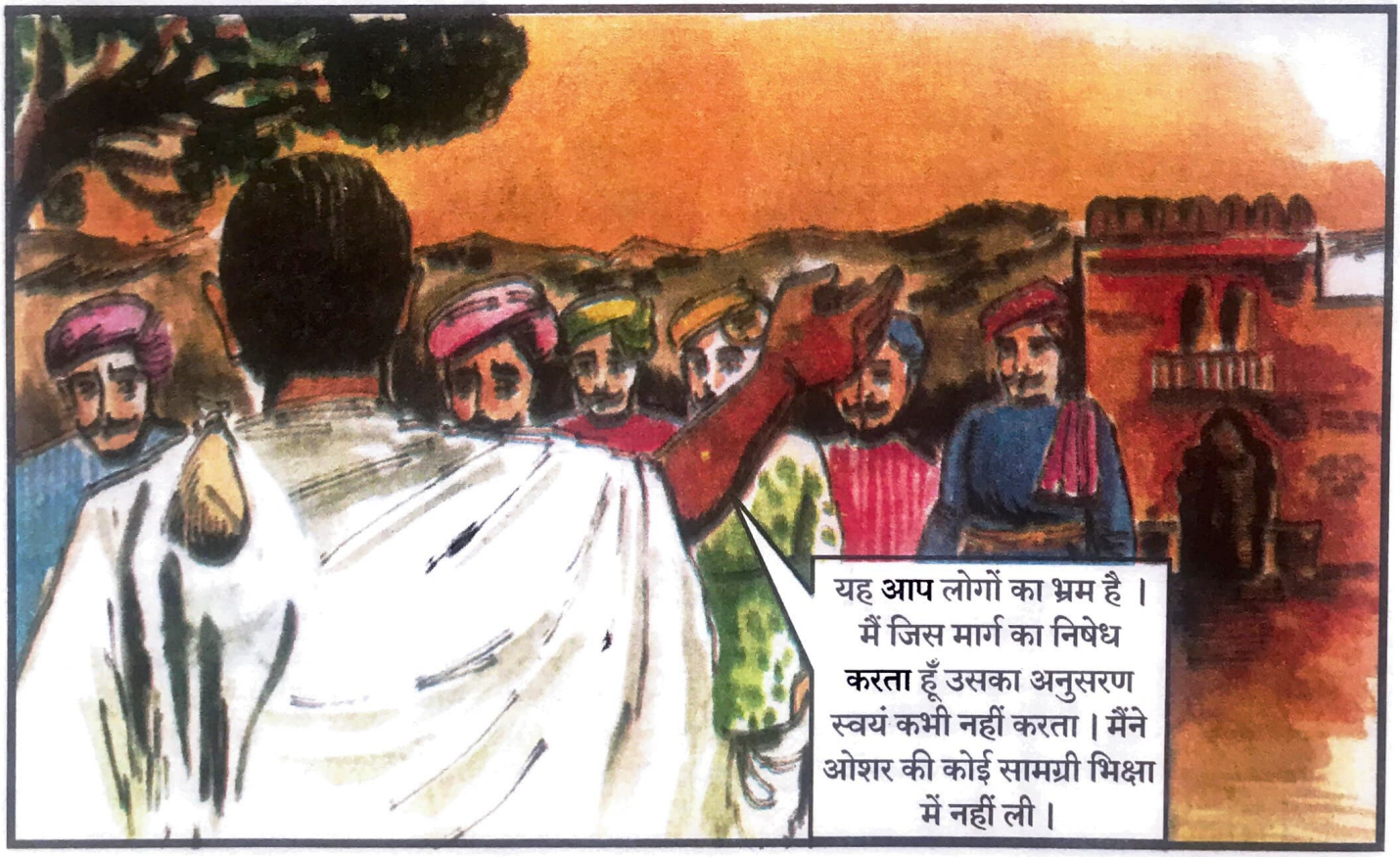

इस रस्साकशी में वहाँ भारी भीड़ जमा हो गई ।
हम ऐसे नहीं मान सकते ।
आप अपने पात्र दिखाइये ।
हां, हां, झोली खोलो !
हां, हां, झोली खोलो !

आचार्य भिक्षु ने पात्र दिखा दिया । उसमें रोटी का केवल एक टुकड़ा था !

हस्तक्षेप करने वाले शर्मिन्दा होकर बिना कुछ कहे इधर-उधर खिसक गये ।

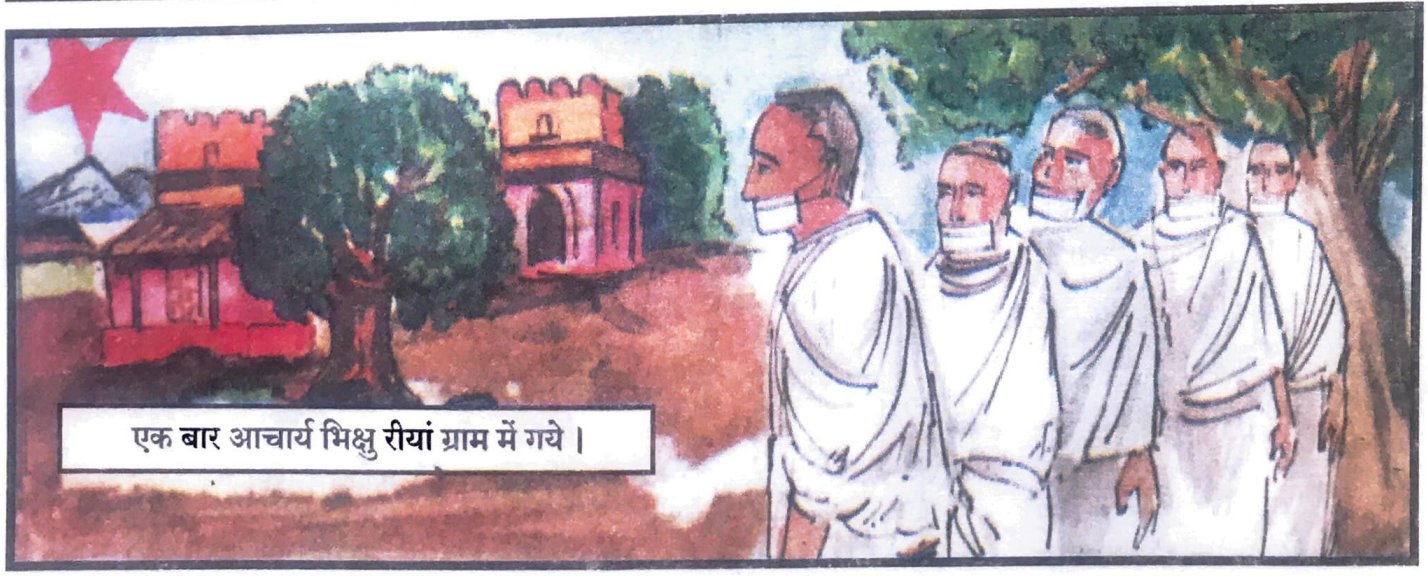
एक बार आचार्य भिक्षु रीयां ग्राम में गये ।

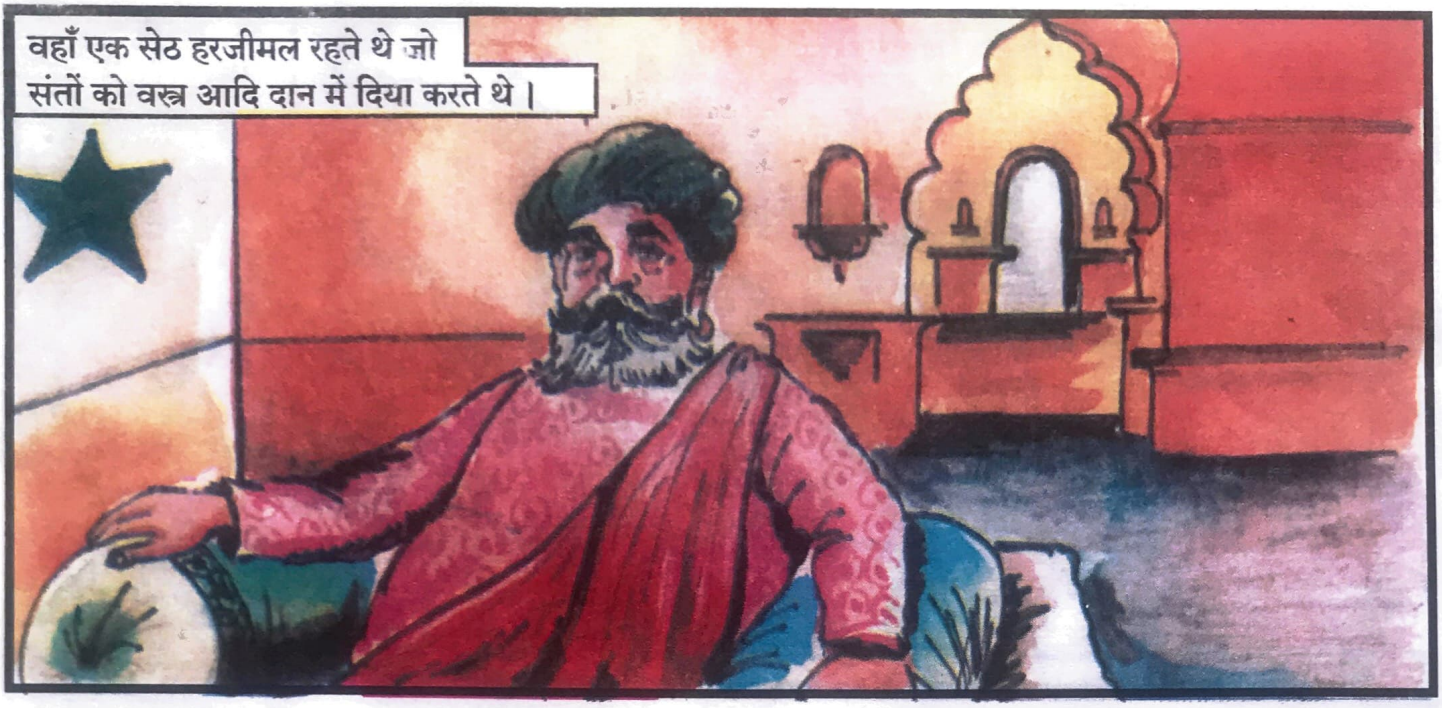
वहाँ एक सेठ हरजीमल रहते थे जो
संतों को वस्त्र आदि दान में दिया करते थे।

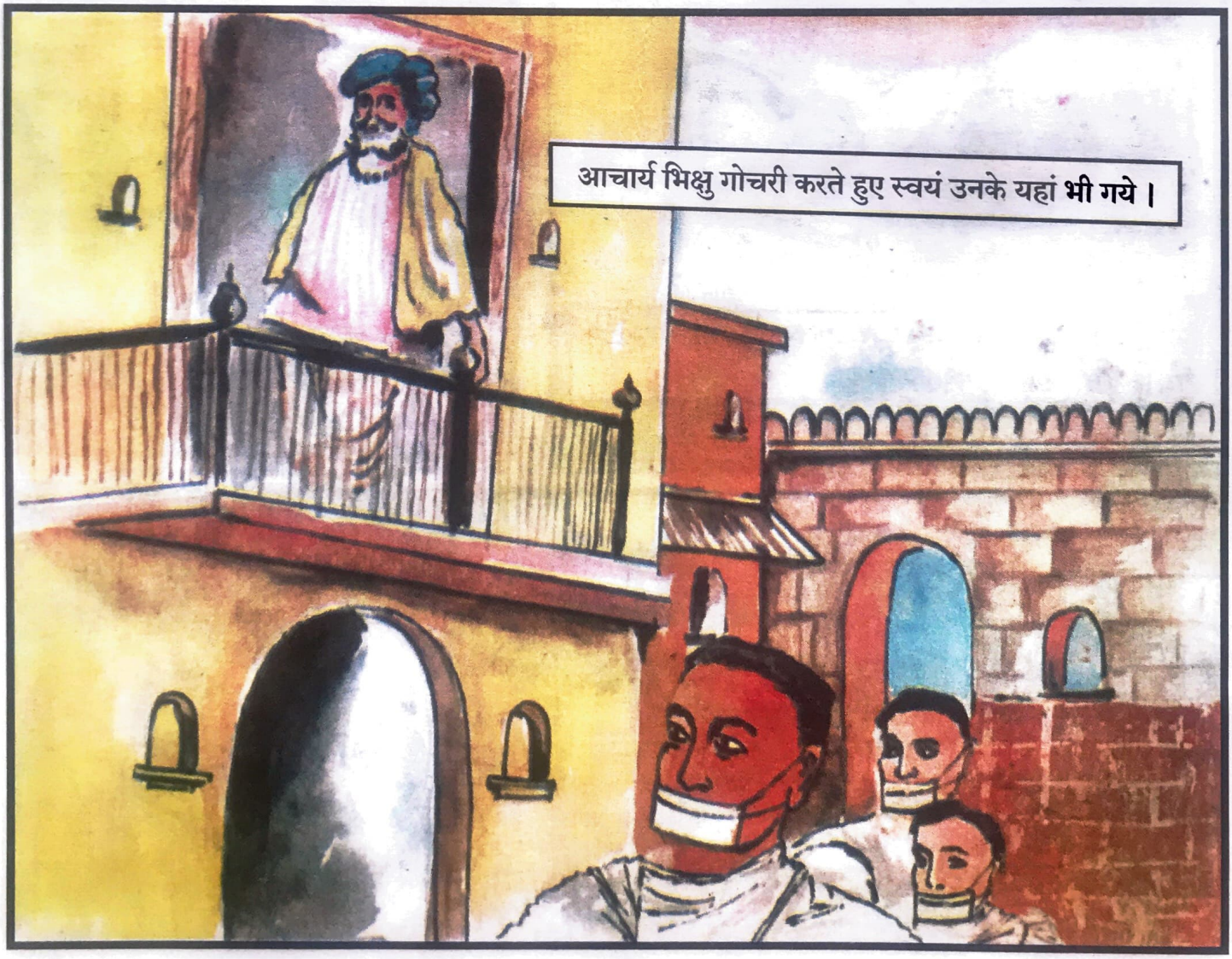
आचार्य भिक्षु गोचरी करते हुए स्वयं उनके यहां भी गये।

सेठ हरजीमल ने उनका सत्कार किया और भिक्षा के लिए प्रार्थना की ।

फिर वस्त्र देने लगे । हालांकि सेठ जी की भावना निष्कपट थी - फिर भी आचार्य भिक्षु ने नकारते हुए कहा -
आवश्यकता होते हुए भी हम यह वस्त्र नहीं ले सकते, क्योंकि हमें पता है कि आप कपड़ा सन्तों को देने के लिए विशेषरूप से खरीद कर रखते हो ।

सन्तों को कपड़ा खरीद कर देने से क्या होता है ?
उनसे ही पूछो !
कहने को तो वे भी इसमें पाप कहते हैं किन्तु ले लेते हैं । वैसे यह कपड़ा मेरे घर की आवश्यकतानुसार खरीदा गया है । आपके लेने में कोई बाधा नहीं है ।
फिर भी नहीं लेंगे । यह बात आप जानते हैं, मैं जानता हूँ । किस-किस को बतायेंगे । हमारे यहाँ बात बनाने वाले सज्जन बहुत हैं ।

मुनि श्री सुमेरमल जी (लाडनूं)

जन्म - चैत्र शुक्ला 14, सं. 1989, लाडनूं (राज.),
दीक्षा - माघ शुक्ला 7, सं 1998, सरदारशहर (राज.)
आचार्य श्री तुलसी द्वारा
अग्रगण्य - ज्येष्ठ कृष्णा 3 सं. 2010, भीनासर (राज.)
सम्बोधन - तेरापंथ दर्शन मनीषी - माघ शुक्ला ६ सं. 2060, जलगांव (महाराष्ट्र)
विशेष : तीन मुमुक्षुओं को गुरु - निर्देश से दीक्षा प्रदान

मुनि श्री द्वारा लिखित चित्रकथा माला

अखूट खजाना

जैन धर्म में सामायिक एवं संत दर्शन का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है । इसके महत्व को प्रतिपादित करने वाले दो कथानक इस चित्रकथा में लिये गये हैं ।

क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु - भाग-1

तेरापंथ के प्रवर्तक, महान् संत, शिथिलाचार के विरुद्ध शंखनाद फूंकने वाले आचार्य भिक्षु के जन्म, स्थानकवासी परंपरा में दीक्षा व अभिनिष्क्रमण का चित्रण है ।

क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु - भाग-2

अभिनिष्क्रमण के बाद विरोध का स्वर बुलंद हुआ, केलवा की अंधेरी ओरी में तेरापंथ की विधिवत् स्थापना हुई । आहार पानी व स्थान की समस्या सामने आई, इन स्थितियों का सजीव निदर्शन है ।

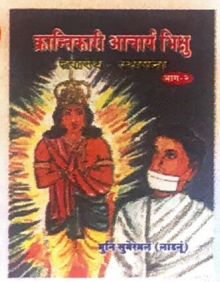

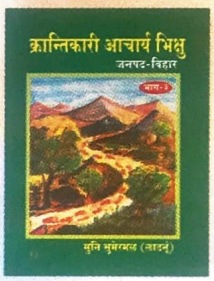

क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु - भाग-3

आचार-संहिता का कड़ाई से पालन, सिद्धान्त प्रतिपादन की कुशलता, असंकीर्णता, न्यायप्रियता, संघर्ष में भी शीतलता एवं संतुलन, प्रत्युत्पन्न मति, विनोद प्रियता जैसी विशेषताओं को प्रकट करते आचार्य भिक्षु के जीवन संस्मरणों का गुंफन है।

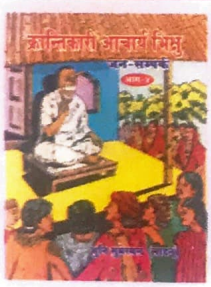

क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु - भाग-4

आचार्य भिक्षु हर बात को कथानाक व दृष्टांत के माध्यम से हरेक के गले उतार देते थे । उनका जनसंपर्क व्यापक था । ठाकुर (जागीरदार) से लेकर ठेट किसान तक उनसे प्रभावित थे । प्रस्तुत भाग में उनके जनसंपर्क की एक झलक प्रदर्शित की गई है ।

क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु - भाग-5

आचार्य भिक्षु आकर्षक व्यक्तित्व के धनी थे । उनके पास जो कोई भी आता वह प्रभावित हुए बिना नहीं रहता । विरोधी लोग भी उनकी विद्वता, साधनाशीलता कुशल वक्तृत्व एवं कष्ट सहिष्णुता का लोहा मानते थे । इन सबकी झलक इस भाग में है ।

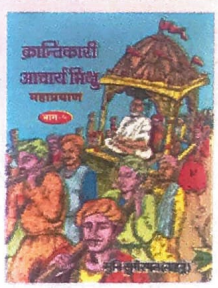

क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु - भाग-6

तेरापंथ के दूसरे आचार्य श्री भारमल जी आचार्य श्री भिक्षु के सर्वात्मना समर्पित थे । तीसरे आचार्य श्री रायचन्द जी बड़े पुण्यवान आचार्य थे ।
दोनों स्वामीजी के हाथों दीक्षित हुए । प्रस्तुत चित्र कथा में दोनों के जीवन की संक्षिप्त झलक प्रस्तुत है ।

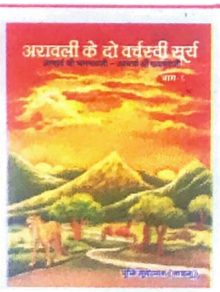

मुनि श्री की अन्य कथा पुस्तकें ।

1. परीलोक
2. बुद्धिलोक
3. नीतिलोक
4. प्रज्ञालोक
5. सत्यलोक
6. दिव्यलोक
7. नारीलोक
8. कर्मलोक
9. उपकार
10. संस्कार
11. सप्त व्यसन
12. विद्याधर श्रीपाल
13. जादूगर श्रीकांत
14. नैतिक कहानियां भाग-1
15. नैतिक कहानियां भाग - 2 आदि - आदि ।

आशीर्वचन

चित्रकथा साहित्य की आकर्षक विधा है । यह आबालवृद्ध सबके मन को भाती है । भावी पीढ़ी के लिए तो यह संस्कार-निर्माण की कुन्जी बन सकती है । चित्रकथाएं बहुत लिखी जाती हैं, पर जो सुरुचिपूर्ण, संस्कार निर्मात्री और संघीय निष्ठा जगाने वाली चित्रकथा हो, उसका महत्त्व ही अलग है, "क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु" चित्रकथा हमारे संघीय इतिहास को उजागर करती है । संस्कार-निर्माण की दृष्टि से भी उसकी उपयोगिता असंदिग्ध है । इनमें वर्णित आचार्य भिक्षु के प्रेरक जीवन प्रसंग पाठकों के लिये बोधपाठ का काम करेंगे, ऐसी आशा की जा सकती है।

मुनि सुमेर (लाडनूं) इतिहास वेत्ता तो है ही, वह आज की भाषा में आज के तरीके से इतिहास लेखन के मर्म को भी पहचानता है । उसकी संघनिष्ठा और समाज में संघीय संस्कार भरने का कौशल बेजोड़ है । कलकत्ता महानगर का पंचवर्षीय प्रवास इसका साक्षी है । अहमदाबाद में भी वह सुनियोजित रूप में सतत काम कर रहा है । अन्यान्य कार्यों के साथ संघ के लिये उपयोगी साहित्य चित्रकथा के निर्माण का सिलसिला सिद्ध करता है कि वह समय-नियोजन की कला में भी निष्णात है ।

विशेष उद्देश्य के साथ लिखी गई ये चित्रकथाएं पाठकों के आकर्षण को बनाये रखती हुई बच्चों के संस्कार निर्माण में उपयोगी बने, यही मंगल भावना है।

२४ जनवरी, १९९७

गणाधिपति तुलसी

आचार्य महाप्रज्ञ